JESUS REDEEMS MINISTRIES

युवा जीवन

जून 2026

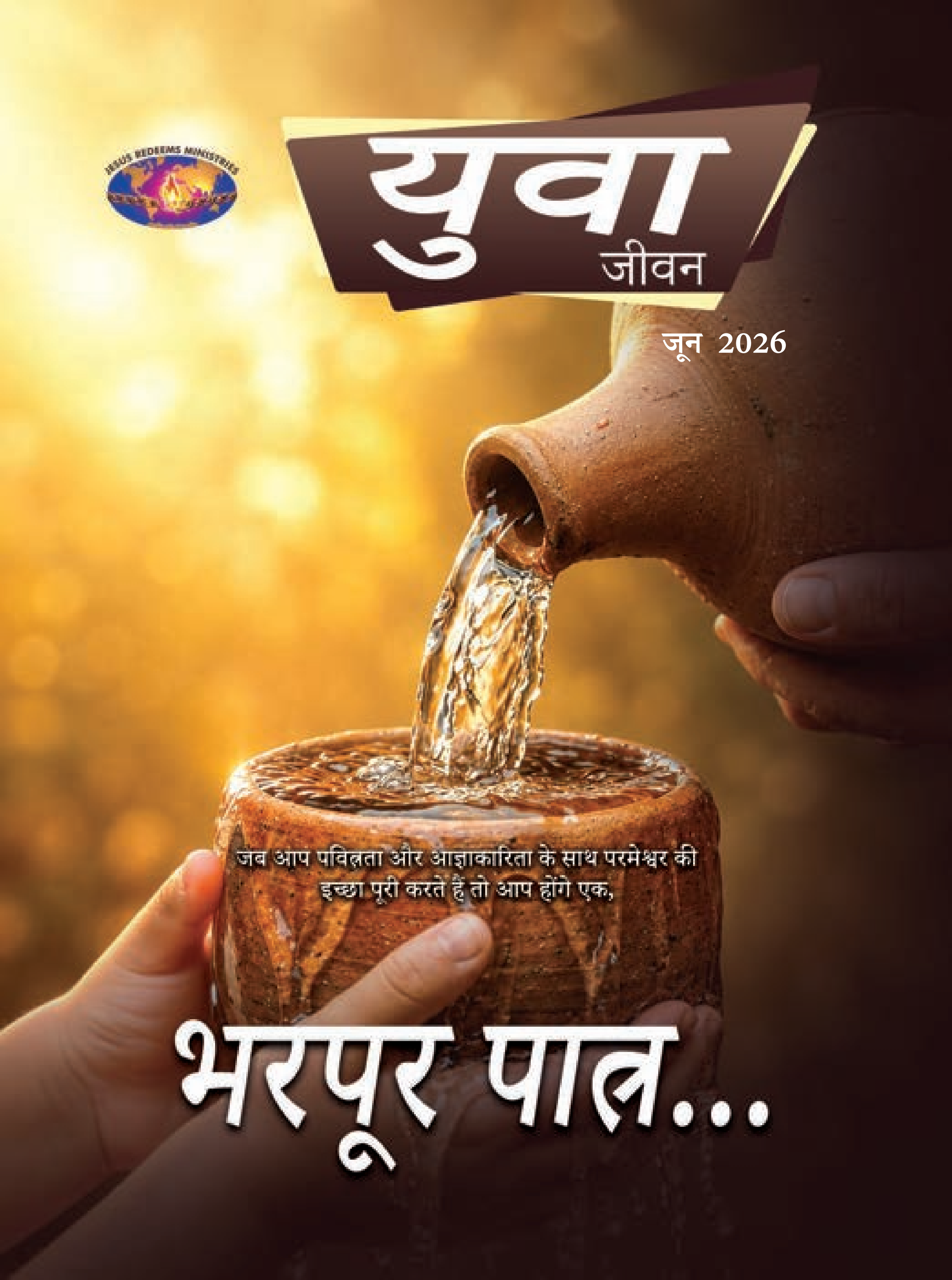

जब आप पवित्रता और आज्ञाकारिता के साथ परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं तो आप होंगे एक,

भरपूर पात्र...

प्रस्तावना

मेरे प्रिय युवा साथियों, यीशु मसीह के नाम में आप सबको अभिनन्दन!

परमेश्वर हमारे जीवन को भरपूर आशीषों से भर देना चाहते हैं। फिर भी कई बार, हम उन आशीषों से वंचित रह जाते हैं, सिर्फ़ इसलिए क्योंकि हम उन्हें पाने के लिए तैयार नहीं होते।

यहोवा का संदूक गती ओबेद-एदोम के घर में तीन महीने तक रहा। उन तीन महीनों के दौरान, परमेश्वर ने न केवल ओबेद-एदोम के परिवार को आशीष दी, बल्कि उससे जुड़ी हर चीज़ को भी आशीष दी।

वही संदूक, जिसने एक बार जान-माल का भारी नुकसान किया था, अब असाधारण आशीष का ज़रिया बन गया था! क्यों? क्योंकि "परमेश्वर ने ओबेद-एदोम को आशीष दी।" ऐसी आशीष के पीछे क्या कारण था?

ओबेद-एदोम ने परमेश्वर के संदूक का आदर और सम्मान किया।

1. उज़्ज़ा ने संदूक के साथ लापरवाही भरा बर्ताव किया, यह मानकर कि वह उसे अपनी मर्ज़ी से कैसे भी संभाल सकता है, और इसका नतीजा बहुत बुरा हुआ। लेकिन ओबेद-एदोम ने उसकी देखभाल बड़े आदर, सम्मान और गहरी भक्ति के साथ की — और इसके परिणामस्वरूप, उसे बड़ी आशीष मिली।

2. उज़्ज़ा की मौत के बाद, लोग संदूक के पास जाने से डरते थे। डर के मारे वे उससे दूर रहते थे। लेकिन ओबेद-एदोम ने परमेश्वर की उपस्थिति का अपने घर में पूरे हृदय से, बिना किसी डर के और विश्वास के साथ स्वागत किया। जब भी आप परमेश्वर और उनकी उपस्थिति को प्राथमिकता देना शुरू करते हैं, तो इसका पक्का नतीजा आशीष ही होता है।

3. जो लोग परमेश्वर की उपस्थिति में आदर और नम्रता के साथ आते हैं, उन्हें इनाम और ऊँचाई मिलती है। लेकिन जो लोग घमंड और दिखावटी भक्ति से भरे होते हैं, उनके लिए परमेश्वर की उपस्थिति डर, दोष-बोध और न्याय का स्थान बन जाती है।

आज भी, परमेश्वर आप युवाओं को आशीष देना चाहते हैं। लेकिन अगर वही आदर, सच्चा प्रेम, नम्रता और परमेश्वर का भय, जो ओबेद-एदोम में पाया गया था, आप में भी पाया जाए, तो आप भी ऐसी आशीषों का अनुभव कर सकते हैं जो माप से कहीं ज़्यादा भरपूर होंगी।

परमेश्वर का अनुग्रह हमेशा आपके साथ रहे!

मसीह की सेवा में,

मोहन सी. लाज़रस

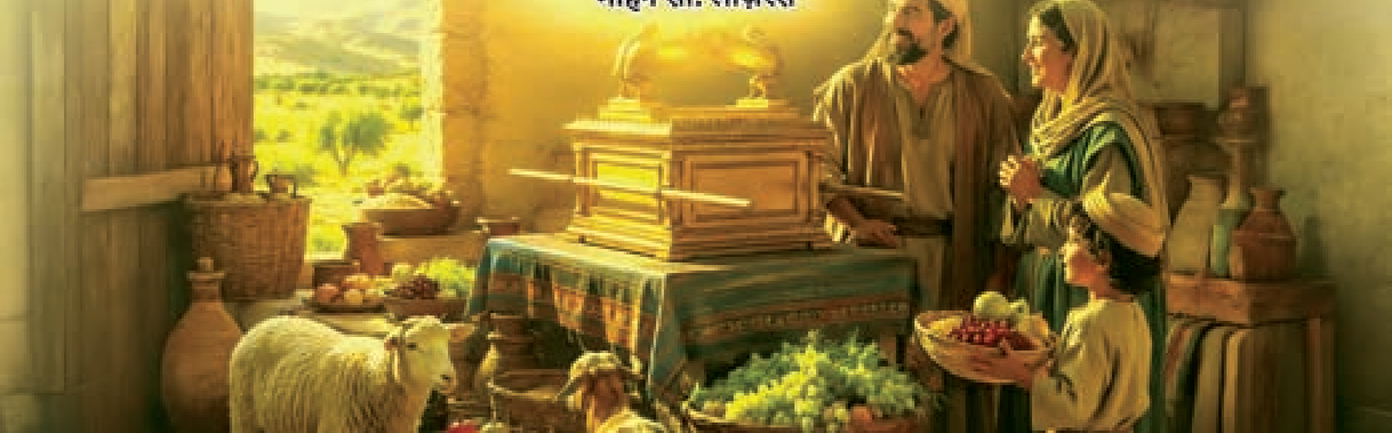

चुनौती का शिखर!

प्रिय युवा विजेताओं, आप सभी को मेरा हार्दिक अभिनन्दन!

ज़्यादातर मामलों में, अवसर हमें ढूँढ़ते हुए हमारे पास नहीं आते। अगर हम बस "सही अवसर" का इंतज़ार करते रहें, तो समय हाथ से निकल सकता है। लेकिन जब हम अवसरों का पीछा करने की हिम्मत करते हैं — या उन्हें स्वयं ही बनाते हैं — तो हम सफलता की अविश्वसनीय ऊँचाइयों तक पहुँच सकते हैं।

यहाँ एक ऐसे इंसान की प्रेरणादायक कहानी है जिसने अपना अवसर स्वयं बनाया और दुनिया के लिए एक सशक्त मिसाल बन गया।

जॉन क्रोनिन की ज़िंदगी कभी आसान नहीं रही। उनका जन्म 'डाउन सिंड्रोम' के साथ हुआ था — एक ऐसी स्थिति जो कई शारीरिक और विकासात्मक चुनौतियाँ लेकर आती है। बचपन से ही उन्हें ऐसी मुश्किलों का सामना करना पड़ा जिन्हें बहुत से लोग समझ भी नहीं पाते थे। फिर भी, उन्होंने स्वयं पर से अपना आत्मविश्वास कभी नहीं खोया। स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद, जॉन ने भी बाकी लोगों की तरह ही नौकरी ढूँढ़ना शुरू किया। लेकिन उन्हें जो भी नौकरियाँ मिलीं, उनमें से किसी से भी उन्हें सच्ची संतुष्टि नहीं मिली।

तभी उन्होंने एक साहसी फ़ैसला लिया:

"मैं अब नौकरी की तलाश नहीं करूँगा — मैं स्वयं नौकरी का अवसर बनाऊंगा!"

अपने पिता के साथ मिलकर, उन्होंने एक बिज़नेस शुरू करने का फ़ैसला किया। उन्होंने कई आइडिया पर विचार किया — जिसमें एक 'फ़न स्टोर' और यहाँ तक कि एक 'फ़ूड ट्रक' बिज़नेस भी शामिल था — लेकिन उनमें से कोई भी सफल नहीं हो पाया। बार-बार असफलता मिलने के बाद भी, जॉन ने कभी हार नहीं मानी।

आखिरकार, रंग-बिरंगे मोज़ों के प्रति अपने प्रेम से प्रेरित होकर, उन्होंने 'जोन्स क्रेज़ी सॉक्स' (John's Crazy Socks) की शुरुआत की। लेकिन चुनौतियाँ यहीं समाप्त नहीं हुईं। बिज़नेस शुरू करने के ठीक पहले ही दिन, उनकी वेबसाइट क्रैश हो गई। बहुत से लोग तो शायद वहीं पर हिम्मत हार जाते। लेकिन जॉन और उनकी टीम ने हार मानने के बजाय, फिर से उठ खड़े होने का फ़ैसला किया। महज़ कुछ ही घंटों के अंदर, उनके पास ऑर्डर्स की झड़ी लग गई। वह पल उनकी अविश्वसनीय सफलता की कहानी का पहला कदम बन गया।

वहाँ से, उनका बिज़नेस तेज़ी से आगे बढ़ा। आज, यह कंपनी संसार भर में हज़ारों लोगों के चेहरों पर खुशी और मुस्कान बिखेर रही है।

लेकिन जॉन का सपना सिर्फ़ पैसे कमाना ही नहीं है, बल्कि उससे कहीं ज़्यादा बड़ा है। वह अपनी कमाई का एक हिस्सा 'स्पेशल ओलंपिक्स' को दान करते हैं और दिव्यांग लोगों के लिए रोज़गार के अवसर पैदा करते हैं। जागरूकता फैलाने वाले खास मोज़ों के ज़रिए, वह समाज में सामाजिक जागरूकता और प्रोत्साहन भी फैलाते हैं।

प्रिय युवा पाठकों, जब आप इस कहानी पर विचार करें, तो यह बात हमेशा याद रखें:

हो सकता है कि जॉन की ज़िंदगी में 'डाउन सिंड्रोम' एक बहुत बड़ी चुनौती रहा हो, लेकिन उन्होंने कभी भी उसे अपनी पहचान या अपनी सीमाओं को तय करने नहीं दिया। इसके बजाय, उन्होंने अपनी चुनौती को ही अपनी जीत में बदल दिया। उन्होंने न सिर्फ़ अपनी ज़िंदगी बदली — बल्कि वे कई और लोगों के लिए उम्मीद और हिम्मत का ज़रिया भी बन गए।

शरीर की कोई कमी असली समस्या नहीं है; असली समस्या तो मन की कमी है। अगर मन हार मान ले, तो आगे बढ़ना नामुमकिन हो जाता है।

तो चलिए, हम अपना रास्ता स्वयं बनाएँ, हिम्मत के साथ उस पर चलें, और बेझिझक आगे बढ़ें... ठीक जॉन क्रोनिन की तरह!

लक्ष्य की ओर सफ़र...

क्या आप भाई फ़ेलिक्स की प्रेरणादायक जीवन यात्रा सुनना चाहेंगे — वह व्यक्ति जिसने कई कोशिशों के बाद UPSC परीक्षा पास की और अब एक रेलवे अधिकारी के तौर पर सेवा दे रहा है? आइए, यह कहानी उन्हीं की ज़ुबानी सुनते हैं।

हमें अपने बचपन और पढ़ाई के बारे में कुछ बताइए।

मेरा जन्म और पालन-पोषण थूथुकुडी के मेलापलायम नाम के एक छोटे से गाँव में, एक मध्यम-वर्गीय परिवार में हुआ था। मैं अपने परिवार का इकलौता बेटा हूँ। मेरे माता-पिता ने मुझे एक मैट्रिकुलेशन स्कूल में दाखिला दिलाने और अच्छी शिक्षा देने के लिए बहुत संघर्ष किया। सच कहूँ तो, 9वीं कक्षा तक मैं पढ़ाई को लेकर ज़्यादा गंभीर नहीं था। उस दौरान, मैं स्कूल में होने वाले एक प्रार्थना समूह में शामिल हो गया और नियमित रूप से प्रार्थना करने लगा। मेरे माता-पिता ने भी मुझे लगन से प्रार्थना करने और पढ़ाई करने के लिए प्रोत्साहित किया। धीरे-धीरे, चीज़ें बदलने लगीं। 10वीं कक्षा में, मैंने दो विषयों में पूरे 100 अंक हासिल किए। 12वीं कक्षा में, मैंने गणित में पूरे 100 अंक हासिल किए और स्कूल का टॉपर बना। उसके बाद, मैंने ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की — एक ऐसा क्षेत्र जिससे मुझे सचमुच प्रेम था — और गोल्ड मेडल के साथ स्नातक की डिग्री हासिल की। मुझे हमेशा से कारों का बहुत शौक रहा है। बचपन से ही, मैंने ऑटोमोबाइल क्षेत्र में नए डिज़ाइन और आविष्कार करने का सपना देखा था, और मैंने अपनी पढ़ाई को उसी सपने की दिशा में केंद्रित किया।

तो, क्या आपका बचपन का सपना सच हुआ? क्या ज़िंदगी उसी दिशा में आगे बढ़ी?

मैंने एक अच्छी कंपनी में नौकरी पाने और धीरे-धीरे अपना करियर बनाने का सपना देखा था। मैंने कई कंपनियों को अपना बायोडाटा भेजा और कई इंटरव्यू दिए। लेकिन हर इंटरव्यू के बाद, एक ही आम सवाल सामने आता था: “क्या कंपनी में कोई ऐसा व्यक्ति है जो आपकी सिफ़ारिश कर सके?” मेरे पास न कोई सिफ़ारिश थी, न कोई रसूख, और न ही पैसे। मैं पूरी तरह से खोया हुआ महसूस कर रहा था। COVID के दौर में, जब मैं प्रार्थना कार्यक्रम “Let's Pray” देख रहा था, तो मैंने रोते हुए परमेश्वर से कहा, “हे प्रभु, आपको ही मेरी सिफ़ारिश

करनी होगी। आपने मुझे एक छोटे से गाँव से उठाकर यूनिवर्सिटी का गोल्ड मेडलिस्ट बनाया। तो फिर अब मैं इतने दर्द से क्यों गुज़र रहा हूँ? मैंने क्या गलती की है?" तभी परमेश्वर ने मेरे हृदय में गहरी बात कही: "तुम मुझसे हर चीज़ माँगते रहे, लेकिन तुमने कभी यह नहीं पूछा कि तुम्हारी ज़िंदगी के लिए मेरी क्या इच्छा है।" उस दिन से, मैंने हर रोज़ पूरी गंभीरता से प्रार्थना करना शुरू कर दिया। एक दिन, परमेश्वर ने मुझसे साफ़-साफ़ कहा: "मैं तुम्हें एक महान अधिकारी बनाऊँगा।" मैं हैरान रह गया। मैंने इंजीनियरिंग की पढ़ाई की थी। प्रशासन या सिविल सेवाओं में मेरी ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन क्योंकि परमेश्वर ने ऐसा कहा, तो धीरे-धीरे मुझे यह साफ़ हो गया कि मुझे सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करनी चाहिए और IAS या IPS बनने की कोशिश करनी चाहिए।

बहुत बढ़िया! तो क्या UPSC में सफल होने में परमेश्वर ने आपकी मदद की?

जब मैंने UPSC की तैयारी के बारे में प्रार्थना की, तो परमेश्वर ने अपने सेवकों के ज़रिए मुझे इसकी पुष्टि की। उन पर पूरी तरह भरोसा करके, मैंने सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी शुरू कर दी। अपने पहले ही प्रयास में, मैंने प्रीलिम्स और मेन्स पास कर लिए और इंटरव्यू के चरण तक भी पहुँच गया।

मैंने सोचा, "परमेश्वर मुझे इतनी दूर तक इतनी खूबसूरती से ले आए हैं — अब सफलता पक्की है!" लेकिन मैं इंटरव्यू में सिर्फ़ 10-15 अंकों से फेल हो गया। उस असफलता से मुझे बहुत गहरा दुख हुआ। मैं समझ नहीं पा रहा था कि परमेश्वर ने मुझे जीत के इतना करीब लाकर भी निराशा का सामना क्यों करवाया। क्योंकि यह मेरा पहला प्रयास था, इसलिए दर्द सहने लायक था। तो मैंने फिर से तैयारी की। लेकिन हैरानी की बात यह थी कि मैं इंटरव्यू के चरण में तीन बार और फेल हो गया। दर्द असहनीय हो गया, खासकर जब रिश्तेदारों और आस-पास के लोगों से अपमानजनक बातें सुनने को मिलीं। मैं मानसिक रूप से थक गया और टूट गया। फिर 2025 में, परमेश्वर ने मुझसे फिर बात की: "मैं तुम्हें खुशी और आनंद दिखाऊँगा। एक बार और कोशिश करो।" सच कहूँ तो, मैं फिर से फेल होने से बहुत डरा हुआ था। लेकिन क्योंकि परमेश्वर ने मुझसे एक बार और कोशिश करने को कहा था, इसलिए मैंने एक आखिरी प्रयास किया। इस बार, परमेश्वर ने मुझे सफलता दिलाई। आज, उन्होंने मुझे ऊँचा उठाया है और मुझे एक रेलवे अधिकारी का पद दिया है।

वाह! ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग से UPSC तक — यह बदलाव आखिर हुआ कैसे?

कॉलेज के बाद, मैं एक बहुत ही मुश्किल नौकरी कर रहा था। COVID से पहले, ज़िला कलेक्टर हमारे गाँव में कल्याणकारी योजनाओं के लिए आए थे। उसे देखने के बाद, मेरे पिता ने मुझसे पूछा, "तुम भी कलेक्टर क्यों नहीं बन सकते?" मैंने तुरंत जवाब दिया, "यह कोई मामूली बात नहीं है। यह बहुत ज़्यादा मुश्किल है।" लेकिन उसी

समय के आसपास, परमेश्वर ने भी मुझसे बात करना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे, मैं अपने जीवन के लिए उनके उद्देश्य को समझने लगा। मैं अपने पिता का सपना भी पूरा करना चाहता था, और यही एक कारण बना कि मैंने UPSC की तैयारी शुरू की।

UPSC की तैयारी में दबाव, असफलताएँ और अपमान झेलना पड़ता है। आपने इन सबसे कैसे पार पाया?

अगर यह इंजीनियरिंग से जुड़ा होता, तो मैं प्रोफेसरों या दोस्तों से मार्गदर्शन माँग सकता था। लेकिन मेरे परिवार में किसी ने भी पहले कभी सिविल सर्विसेज़ की पढ़ाई नहीं की थी। मैं अपने परिवार का पहला सिविल सर्वेंट बना। सच कहूँ तो, मेरा मार्गदर्शन करने वाला कोई नहीं था। जब मैंने परमेश्वर से प्रार्थना करके पूछा कि मुझे क्या करना चाहिए, तो उन्होंने कुछ लोगों और संपर्कों के ज़रिए मेरी मदद की, जिन्होंने मुझे बताया कि शुरुआत कैसे करनी है। मैंने पूरी तैयारी स्वयं से पढ़ाई करके की। पहला चरण बहुत मुश्किल था। अपनी कोशिशों के दौरान, कुछ लोगों ने ऐसी बातें कहीं जिनसे मुझे बहुत दुख हुआ, जैसे, "हर कोई इस परीक्षा के लिए काबिल नहीं होता।" उन बातों ने मुझे अंदर तक चोट पहुँचाई। लेकिन क्योंकि परमेश्वर मेरे साथ थे, मैं हर अपमान और निराशा का सामना कर पाया।

आखिर में, आप आज इसे पढ़ रहे युवाओं से क्या कहना चाहेंगे?

UPSC को देखकर यह मत सोचिए कि, "यह नामुमकिन है।" यह एक ऐसी परीक्षा है जो प्रतिभा और लगन की परख करती है। इसे पास करने में मुझे पाँच साल लगे। अनुभवी लोगों से सीखें। पिछले सालों के प्रश्न-पत्रों का अध्ययन करें — उनसे आपको बहुत ज़्यादा स्पष्टता और नए विचार मिलेंगे। शुरुआत करने वालों को शुरू में ही अनगिनत वीडियो और लिंक के जाल में नहीं उलझना चाहिए। किताबों से शुरुआत करें और अपनी नींव मज़बूत बनाएँ। किसी भी सपने तक पहुँचने का हर रास्ता मुश्किलों भरा होता है। इसमें दर्द, देरी, निराशाएँ और ऐसे पल भी आएँगे जब लगेगा कि कुछ भी ठीक नहीं हो रहा है। लेकिन जब आप परमेश्वर को सबसे पहला स्थान देते हैं और उन्हें अपना मार्गदर्शक बनने देते हैं, तो वे आपको कभी अकेला नहीं छोड़ेंगे। वे हमेशा आपके साथ रहेंगे और आपके सपनों को पूरा करेंगे।

प्रिय युवाओं, जब आप एक स्पष्ट लक्ष्य और उद्देश्य के साथ पढ़ाई करते हैं, तो थकान आप पर हावी नहीं हो पाती। ठीक इसी तरह, भाई फेलिक्स बार-बार असफल होने के बावजूद आगे बढ़ते रहे। उन्होंने कभी भी अपने सपने का पीछा करना नहीं छोड़ा। इसलिए, असफलता से निराश न हों। अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहें। एक दिन, आपकी यह यात्रा किसी और के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी।

हेलो मित्रों,

आप सब कैसे हैं? मुझे इस शृंखला, 'विज्ञान और बाइबल' के माध्यम से एक बार फिर आपसे मिलकर बहुत ख़ुशी हो रही है।

आज, आइए हम एक ऐसी चीज़ पर नज़र डालें जिसमें दूसरों की रक्षा करने की सामर्थ है।

यदि आप सेब का एक टुकड़ा काटते हैं और उसे बिना खाए खुला छोड़ देते हैं, तो क्या होता है? केवल पाँच मिनट के भीतर ही, वह भूरा पड़ने लगता है, है ना? लेकिन यदि कटे हुए सेब को तुरंत नमक वाले पानी में डाल दिया जाए, तो वह ताज़ा रहता है और उसका रंग नहीं बदलता।

ऐसा क्यों होता है?

जब सेब को काटा जाता है, तो हवा में मौजूद ऑक्सीजन उसकी सतह के साथ प्रतिक्रिया करती है, जिससे वह भूरा पड़ जाता है। इस प्रक्रिया को 'ऑक्सीकरण' (Oxidation) कहते हैं। हालाँकि, जब सेब को नमक वाले पानी में डाला जाता है, तो नमक उसके चारों ओर एक सुरक्षात्मक परत बना लेता है। यह ऑक्सीजन को फल तक पहुँचने से रोकता है। इसके अलावा, नमक उस एंजाइम की गति को धीमा कर देता है जो रंग बदलने के लिए ज़िम्मेदार होता है। परिणामस्वरूप, सेब के टुकड़े कई घंटों तक ताज़े, चमकदार और आकर्षक बने रहते हैं। बाद में, उन्हें धोकर बिना किसी नमकीन स्वाद के खाया जा सकता है।

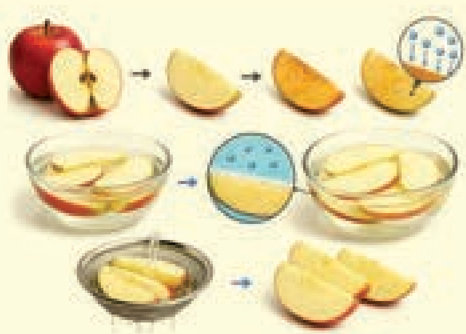

ठीक इसी तरह, मेरे प्रिय मित्रों, हमें भी नमक जैसा बनना चाहिए—दूसरों को दुनिया के बुरे प्रभावों से बचाना चाहिए, और उन्हें पवित्रता के मार्ग की ओर मार्गदर्शन देना चाहिए।

अब, नमक पानी में क्यों घुल जाता है?

नमक एक आयनिक यौगिक है जिसे NaCl कहते हैं, जबकि पानी H_2O अणुओं से मिलकर बना होता है। जब नमक को पानी में मिलाया जाता है, तो सोडियम (Na) और क्लोराइड (Cl) के बीच का बंधन टूट जाता है। फिर ये कण पानी के अणुओं से जुड़ जाते हैं। सोडियम ऑक्सीजन की ओर आकर्षित होता है, जबकि क्लोराइड पानी के अणुओं के हाइड्रोजन वाले हिस्से से घिर जाता है। यही कारण है कि नमक पूरी तरह से घुल जाता है, और हमारी आँखों को केवल पानी ही दिखाई देता है।

इसी प्रकार, जब हम पवित्र आत्मा के लिए अपने जीवन में जगह बनाते हैं, तो संसार से बाँधने वाले हमारे बंधन टूटने लगते हैं। हम उसके और करीब आ जाते हैं, उसमें छिप जाते हैं, और धीरे-धीरे उसके स्वभाव को अपने जीवन में प्रकट करने लगते हैं। तब हमारे जीवन के द्वारा उसकी महिमा होगी। हम आदर के पात्र बन जाएँगे, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सामर्थी रूप से उपयोग किया था।

यही कारण है कि यीशु ने मत्ती 5:13 में यह घोषणा की थी, "तुम पृथ्वी के नमक हो।"

इसलिए, आइए हम नमक बनें—दूसरों को विनाश के मार्ग से बचाएँ, स्वयं को प्रभु में छिपाएँ, और अपने जीवन के द्वारा दुनिया के सामने यीशु को प्रकट करें।

(जारी रहेगा ...)

यीशु की तरह उमड़ता हुआ अभिषेक

"क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है: क्योंकि वह आत्मा नाप नापकर नहीं देता।" — यूहन्ना 3:34

जब तक आप में अभिषेक उमड़कर बाहर नहीं आएगा, तब तक पवित्र आत्मा आपको प्रार्थना में बढ़ने में मदद नहीं करेगा। यह पवित्र आत्मा ही है जो हमारे हृदयों में मसीह का प्रेम उंडेलता है। यह पवित्र आत्मा ही है जो हमारे भीतर यीशु की नम्रता उत्पन्न करता है। यह पवित्र आत्मा ही है जो हमारी आत्माओं में मसीह की करुणा जगाता है। यह पवित्र आत्मा ही है जो हमें यीशु की तरह दुख सहने की शक्ति देता है। यह पवित्र आत्मा ही है जो हमें पिता की इच्छा को समझने में मदद करता है।

इसलिए, हमें पूरी तरह से पवित्र आत्मा से भर जाना चाहिए। जिस तरह पिता ने यीशु को आत्मा बिना किसी नाप-तोल के दिया था, उसी तरह वह हमें भी भरपूर मात्रा में भरना चाहता है।

यीशु के जीवन पर एक नज़र

पहला

लूका 1:35 में, स्वर्गदूत ने मरियम से कहा, "पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा।" पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से ही, मरियम के गर्भ में यीशु मसीह का स्वरूप बना।

दूसरा

लूका 3:21–22 में लिखा है कि जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया, तो यीशु ने भी बपतिस्मा लिया—और जब वह प्रार्थना कर रहा था, तो स्वर्ग खुल गया।

भीड़ ने बपतिस्मा लिया और चली गई, लेकिन यीशु प्रार्थना में लीन रहे। जब वह प्रार्थना कर रहे थे, तो स्वर्ग खुल गया, और पवित्र आत्मा कबूतर के रूप में उन पर उतरा।

तीसरा

लूका 4:1 में, यीशु, जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे, आत्मा द्वारा जंगल में ले जाए गए। फिर पद 14 में, वह आत्मा की सामर्थ्य के साथ लौटे और ईश्वरीय शक्ति से लैस होकर अपनी सेवकाई शुरू की।

पिता ने उन्हें एक असीम अभिषेक प्रदान किया था।

इस अभिषेक का महत्व

यह अभिषेक अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन अंतिम दिनों में, परमेश्वर अपने लोगों पर एक विशेष अभिषेक उंडेलना चाहता है। उसने घोषणा की है, "मैं सब प्राणियों पर अपनी आत्मा उंडेलूंगा।" प्रभु हम पर अपनी आत्मा एक प्रचंड बाढ़ की तरह उंडेलने की अभिलाषा रखता है। इसलिए, हमें पुकारना चाहिए:

"हे प्रभु, मुझे वह अभिषेक प्रदान कर। मुझे अपनी पवित्र आत्मा से भर दे।"

यीशु की महिमामयी सेवकाई का रहस्य

यीशु की सेवकाई इतनी महिमामयी और सामर्थी क्यों थी? अभिषेक के कारण।

लूका 4:18 में, यीशु ने घोषणा की:

"प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने मुझे गरीबों को सुसमाचार सुनाने के लिए अभिषिक्त किया है; उसने मुझे टूटे हुए दिलों को चंगा करने, बंदियों को आज़ादी की घोषणा करने, अंधों को दृष्टि देने, और सताए हुओं को मुक्त करने के लिए भेजा है।"

यही वह अभिषेक था जिसने उनका मार्गदर्शन किया, उन्हें सामर्थ्य दिया, और उनके द्वारा पिता के उद्देश्य को पूरा किया।

वही अभिषेक हमें आत्मिक जागृति के लिए तैयार करता है।

जो भी कार्य परमेश्वर ने आपको सौंपा है, उसके लिए आपको अभिषेक की आवश्यकता है। इसलिए प्रार्थना करें:

"हे प्रभु, मुझे तेरे अभिषेक की आवश्यकता है। मुझे अपने पवित्र आत्मा से बिना किसी माप के भर दे।"

यीशु ने वह अभिषेक असीमित रूप से प्राप्त किया। यही उनके जीवन और सेवकाई की सफलता के पीछे का छिपा हुआ रहस्य था।

हर दिन एक नया अभिषेक

हमें हर दिन एक नए अभिषेक की आवश्यकता होती है।

कल का अभिषेक आज की लड़ाइयों के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता। हर दिन नए तेल, नए अनुग्रह और नई सामर्थ की आवश्यकता होती है।

परमेश्वर प्रतिदिन अभिषेक को नया करता है। वह उन लोगों को नया अनुग्रह और नई शक्ति प्रदान करता है जो उसकी प्रतीक्षा करते हैं।

इसलिए:

- उसके वचन पर मनन करें
- उसकी उपस्थिति में प्रतीक्षा करें
- लगन से प्रार्थना करें
- उसे और अधिक पाने की प्यास रखें

युवा हृदयों के लिए एक पुकार

हे प्रिय युवाओं, क्या आप इस अभिषेक की लालसा रखते हैं?

यदि आप प्यास और ईमानदारी के साथ पुकारते हैं:

"हे प्रभु, मुझे तेरे अभिषेक की आवश्यकता है। मैं बिल्कुल तेरी ही तरह जीना चाहता हूँ।"

वह आपको तब तक भरता रहेगा जब तक आप बिना किसी माप के उमड़ न पड़ें।

तब आप भी यीशु की तरह जीएँगे, यीशु की तरह चलेंगे, और उसकी महिमा के लिए चमकेंगे।

Revival IGNITERS

इग्नाइटर्स यूथ फ़ेलोशिप एक जगह है जहां युवा अपनी आध्यात्मिकता को प्रज्वलित करते है जीवन की गहन सच्चाइयों की खोज करें बाइबल, और प्रार्थना करने में शक्ति पाएँ एक समूह के रूप में देश।आपका स्वागत है इस फ़ेलोशिप में शामिल होने और बढ़ने के लिए मजबूत। चलो भी! अपने आप को मजबूत करो,और दूसरों को मजबूत करने के लिए तैयार हो जाइये !

हर पहले रविवार
Mumbai – Dharavi
Timing: 5.00 PM- 7.30 PM
World Revival Prayer Centre
2nd Floor, Above Balakrishna
Farsan Mart, Opp. Apna Restaurant,
Near Kamarajar School,
90 Feet Road,
9004882470

हर दूसरे रविवार
THANE
Timing: 5PM - 7:30PM
R.P. Mangala High School
(Near Railway Station),
Room No.10,
Opp. Bank of Maharashtra,
Thane (East)
9004882470

हर चौथे रविवार
Mumbai-Malad
Timing: 4.00 PM – 6.00 PM
Bethel Ground Floor
305/E, Mith Chauky,
Marve Road,
Malad (W)
9664050567 | 9619996976

भरपूर आशीषें!

आज के युवाओं के दौर में, हममें से ज़्यादातर लोगों की एक ही आम उम्मीद होती है:

"मुझे जीवन में स्थिर होना है—एक अच्छी नौकरी पानी है, अच्छा कमाना है, अपना रुतबा बनाना है—और यह सब एक तय समय-सीमा के अंदर हो जाना चाहिए।"

हालांकि यह चाहत सच्ची है, लेकिन इसका एक दूसरा पहलू भी है—भविष्य को लेकर डर, बेचैनी, और यह लगातार उठने वाला सवाल, "मेरी ज़रूरतें कब पूरी होंगी?" लेकिन सच तो यह है: परमेश्वर आपके भविष्य को आशीष में बदल सकते हैं। आशीष कोई अचानक मिलने वाली चीज़ नहीं है—यह अक्सर आपके द्वारा की गई मेहनत का ही नतीजा होती है।

इसकी शुरुआत आपके पास मौजूद चीज़ों से होती है

एलीशा के समय में, एक विधवा थी जिसके पति की मौत हो गई थी। कर्ज़ चुकाने के लिए, कर्ज़दार उसके दो बेटों को गुलाम बनाकर ले जाने आ गए। अपनी बेबसी में, उसने एलीशा को पुकारा। उन्होंने उससे पूछा, "तुम्हारे घर में क्या है?" (2 राजा 4:2)। उसने जवाब दिया, "कुछ नहीं... सिवाय तेल की एक छोटी-सी कुप्पी के।" क्योंकि उसने ईमानदारी से वह थोड़ी-सी चीज़ परमेश्वर को सौंप दी जो उसके पास थी, इसलिए परमेश्वर ने उस एक कुप्पी को तब तक आशीष दी जब तक कि कई बर्तन भर नहीं गए और उनमें से तेल छलकने नहीं लगा।

ठीक इसी तरह, आपके पास जो कुछ भी है—आपके हुनर, आपकी पढ़ाई-लिखाई, आपकी प्रतिभाएँ—उसे परमेश्वर के हाथों में सौंप दीजिए। वह उसे भरपूर आशीष में बदल सकते हैं। यह बात कभी मत भूलिए: आशीष की शुरुआत हमेशा उन चीज़ों से होती है जो आपके पास पहले से मौजूद हैं। उसने एलीशा की बात मानी, खाली बर्तन जमा किए, और खूब मेहनत की। उसकी मेहनत के मुताबिक, परमेश्वर ने हर बर्तन को तब तक भरा जब तक कि वह छलकने नहीं लगा।

जब मेहनत व्यर्थ लगने लगे

ज़िंदगी में ऐसे पल भी आते हैं जब, आप चाहे कितनी भी मेहनत क्यों न कर लें, आपको सिर्फ़ नाकामी ही हाथ लगती है। कामयाबी बहुत दूर नज़र आती है।

यहाँ तक कि पतरस और उसके मित्रों ने भी पूरी रात मेहनत की, लेकिन उनके हाथ कुछ भी नहीं लगा। उनके अनुभव और मेहनत के बावजूद, उनकी नाव खाली ही रही। लेकिन जब उन्होंने अपनी नाव में यीशु मसीह के लिए जगह बनाई और उनकी यह बात मानी कि वे गहरे पानी में जाकर अपने जाल डालें, तो सब कुछ बदल गया। उनके जाल मछलियों से इतने भर गए कि वे फटने ही वाले थे, और दोनों नावें मछलियों से लबालब भर गईं।

आपके लिए एक संदेश

प्रिय नौजवानों, अपनी परिस्थिति देखकर हिम्मत मत हारिए। जब आप अपने पास मौजूद चीज़ों का सही इस्तेमाल करते हैं और परमेश्वर के दिखाए रास्ते पर चलते हैं, तो वह आपके जीवन को बहुत से लोगों के लिए एक आशीष बना सकते हैं। जब आप सिर्फ़ अपनी समझ पर निर्भर रहना छोड़कर, परमेश्वर के वचन और मार्गदर्शन को महत्व देना शुरू करेंगे, तो आप अपने जीवन में ढेरों आशीषें बरसते हुए देखेंगे।

अपने आराम के दायरे से बाहर निकलें

अगर आप सिर्फ़ अपने आराम के दायरे (comfort zone) में ही रहेंगे, तो आपको बड़ी आशीषें नहीं मिल पाएंगी।

चाहे आपकी पढ़ाई हो, आपकी प्रतिभा हो, आपका करियर हो, या आपका आध्यात्मिक जीवन—अगर आप ढेरों आशीषें पाना चाहते हैं, तो यह पक्का करें कि यीशु आपके जीवन की नाव में मौजूद हों। तभी आप एक ऐसे जीवन का अनुभव कर पाएंगे जो सचमुच भरा-पूरा और आशीषों से भरपूर होगा।

हर पांचवें रविवार को हमारे पास युवाओं के लिए एक विशेष कार्यक्रम होता है - "रिवाइवल इग्नाइटर फ़ेलोशिप"। यह जीसस रिडीम्स मिनिस्ट्रीज के यूट्यूब चैनल पर 06/03/2026 और 31/05/2026 को दोपहर 3:00 बजे "लाइव" प्रसारित किया जाएगा।कृपया अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए नंबर पर हमसे संपर्क करें।

Revival IGNITERS

संपर्क संख्या : +919750955548

YouTube Jesus Redeems - Hindi

Comforter

www.comfortertv.com

तनावग्रस्त

हेलो मित्रों! उम्मीद है आप सब ठीक होंगे। मुझे इस सीरीज़, जिसका नाम "तनावग्रस्त"(Under Pressure) है, के ज़रिए आपसे दोबारा मिलकर बहुत ख़ुशी हो रही है।

इस श्रृंखला में हर महीने, हम यह देखते हैं कि कैसे कोई चीज़ दबाव में टूटती है, आकार लेती है, बदलती है और निखरती है — और कैसे यह प्रक्रिया उसकी कीमत, मकसद और ख़ूबसूरती को बढ़ा देती है।

इस महीने, आइए बात करते हैं कि मिट्टी का बर्तन कैसे बनाया जाता है।

मिट्टी का एक ढेला रातों-रात एक ख़ूबसूरत बर्तन नहीं बन सकता। उसे बहुत ज़्यादा दबाव और बदलने की एक लंबी प्रक्रिया से गुज़रना पड़ता है। आइए देखें कि वह सफ़र कैसा होता है।

मिट्टी का बर्तन कैसे बनता है?

मिट्टी के बर्तन बनाना तमिलनाडु के सबसे पुराने पारंपरिक शिल्पों में से एक है, जिसका इतिहास 5,000 साल से भी ज़्यादा पुराना है।

किन चीज़ों की ज़रूरत होती है?

खेतों या तालाब के किनारों से लाई गई मिट्टी, बिना रेत वाली शुद्ध काली या लाल मिट्टी, कुम्हार का चाक, पानी, डिज़ाइन बनाने के लिए औज़ार, भट्टी, पुआल और जलाने वाली लकड़ी।

बनाने का तरीका

मिट्टी तैयार करना

मिट्टी को दो दिनों तक पानी में भिगोकर रखा जाता है। उसमें से पत्थर और लकड़ियाँ निकाल दी जाती हैं, और फिर उसे पैरों से तब तक अच्छी तरह रौंदा जाता है जब तक वह चिकनी न हो जाए और उसमें हवा के बुलबुले न रह जाएँ — बिल्कुल नरम आटे की तरह।

गूँथना

मिट्टी को गोल-गोल घुमाकर एक गेंद का आकार दिया जाता है।

चाक पर रखना

मिट्टी की गेंद को घूमते हुए चाक के बीचों-बीच रखा जाता है।

बर्तन को आकार देना

कुम्हार अपनी उंगलियों और हथेलियों से मिट्टी को सावधानी से दबाता है, और धीरे-धीरे उसे एक बर्तन का आकार देता है।

गर्दन बनाना

बर्तन के ऊपरी हिस्से को बाहर की ओर मोड़कर उसकी गर्दन बनाई जाती है, जबकि उंगलियाँ धीरे-धीरे उसमें ख़ूबसूरती और बारीकियां जोड़ती हैं।

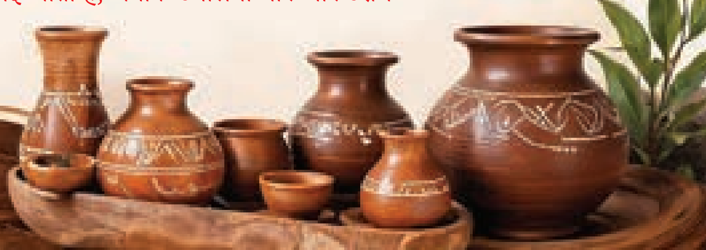

चाक से अलग करना

जब बर्तन का आकार पूरा हो जाता है, तो उसे एक तार की मदद से चाक से काटकर एक तख्ते पर रख दिया जाता है।

सुखाना

उसे दो दिनों तक छाँव में धीरे-धीरे सूखने के लिए छोड़ दिया जाता है।

पॉलिश और डिज़ाइन बनाना

बर्तन की सतह को चिकने पत्थरों से तब तक पॉलिश किया जाता है जब तक वह चमकने न लगे, और फिर उस पर सजावटी पैटर्न और डिज़ाइन बनाए जाते हैं।

भट्टी में पकाना

आखिर में, बर्तनों को पुआल और लकड़ी के साथ एक भट्टी के अंदर रखा जाता है और लगभग आठ घंटों तक 800°C से 1000°C के तापमान पर पकाया जाता है। आग पूरी तरह ठंडी हो जाने के बाद ही उन्हें बाहर निकाला जाता है।

मिट्टी के बर्तन बहुत फ़ायदेमंद होते हैं। वे भोजन को प्राकृतिक रूप से ठंडा रखते हैं, पोषक तत्वों को सुरक्षित रखते हुए भाप को बाहर निकलने देते हैं, और यहाँ तक कि पानी में कैल्शियम जैसे खनिज भी मिलाते हैं। उनके फायदे अनगिनत हैं।

देखा मित्रों? ज़रा मिट्टी की इस यात्रा को देखो! यह एक सुंदर और उपयोगी बर्तन केवल इसलिए बन पाई, क्योंकि इसने दबाव, आकार देने की प्रक्रिया और आग को सहन किया।

एक बर्तन को ठीक से बनाने के लिए, मिट्टी की बनावट सही होनी चाहिए। अगर यह बहुत नरम हो, तो बर्तन ढह जाता है। अगर यह बहुत सख्त हो, तो इसमें दरार पड़ जाती है। इसीलिए कुम्हार इसे अपने पैरों से दबाता और गूँथता है।

ठीक इसी तरह, अगर हम बहुत कमज़ोर हृदय के हों, तो मुश्किल परिस्थितियाँ हमें टूटा हुआ और बेसहारा छोड़ सकती हैं। लेकिन अगर हम कठोर हृदय के बन जाएँ, तो हम केवल अपनी ही समझ पर निर्भर रह सकते हैं और गलत चुनाव कर सकते हैं। इसलिए परमेश्वर हमारे जीवन में तनाव के दौर आने देते हैं — ठीक वैसे ही जैसे कुम्हार मिट्टी को दबाता है — ताकि हमें मज़बूत, स्थिर और तैयार कर सकें। और इसका अंतिम परिणाम हमेशा शानदार होता है।

ठीक जैसे मिट्टी को बर्तन में बदलने के लिए पानी ज़रूरी है, वैसे ही हमारे रूपांतरण के लिए पवित्र आत्मा ज़रूरी है।

ठीक जैसे पत्थर रगड़ खाकर बर्तन को चमकाते हैं, वैसे ही जीवन की कुछ दर्दनाक परिस्थितियाँ हमें आकार देती हैं और हमारे भीतर मसीह के चरित्र को प्रकट करती हैं।

और ठीक जैसे बर्तन आग से गुज़रने के बाद ही मज़बूत बनता है, वैसे ही हम भी उन अग्नि-परीक्षाओं से गुज़रकर अडिग बन जाते हैं जिनका हम सामना करते हैं। इसीलिए परमेश्वर कभी-कभी हमारे जीवन में अग्नि-परीक्षाओं के दौर आने देते हैं।

अंत में, हम परमेश्वर के हाथों से गढ़े हुए सुंदर बर्तन बन जाते हैं, जो उसके उद्देश्य के लिए इस्तेमाल होने को तैयार होते हैं।

तो मित्रों, आइए हम कुम्हार के हाथों में मिट्टी की तरह स्वयं को परमेश्वर के हाथों में समर्पित कर दें।

(जारी रहेगा...)

Soul Detox
टालमटोल करना

"मैं बाद में देखूंगा... मैं इसे कल करूंगा..."

आज के युवाओं में यह मानसिकता बहुत आम हो गई है। जो एक छोटी सी आदत लग सकती है, वह धीरे-धीरे हमारी आंतरिक सामर्थ को खत्म कर देती है, तनाव और अपराधबोध पैदा करती है, और हमारा आत्मविश्वास छीन लेती है। समय के साथ, यह जीवन के उद्देश्य को ही कमजोर कर देती है और हमें भ्रम से भर देती है: "मैं जी ही क्यों रहा हूँ?"

हालांकि यह हानिरहित लग सकती है, टालमटोल करना व्यक्तिगत विकास को रोक सकता है, रिश्तों को नुकसान पहुंचा सकता है, और हमें कई कीमती अवसरों से वंचित कर सकता है। इस मानसिकता को बनाना और आपको आपके उद्देश्य से दूर खींचना दुश्मन की रणनीतियों में से एक है। आज, आपको इससे आज़ादी की ज़रूरत है।

टालमटोल करने के मूल कारण अक्सर डर और उचित मार्गदर्शन की कमी होते हैं। एक और बड़ा कारण हर चीज़ में पूर्णता की उम्मीद करना है—और इसी वजह से, कभी शुरुआत ही न करना। हमारे परमेश्वर ने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने अपने समय पर वे सुन्दर होते है। उनके बच्चों के रूप में, हमें भी व्यवस्थित और बेहतरीन तरीके से काम करना सीखना

चाहिए। फिर भी यह याद रखें: जिस प्रभु ने हज़ारों लोगों को खिलाने के लिए पाँच रोटियों और दो मछलियों को आशीष दी, वह आपकी छोटी सी शुरुआत को भी आशीष दे सकते हैं। जब आप वह सब कुछ जो आप कर सकते हैं, परमेश्वर के हाथों में सौंप देते हैं, तो वह उसे पूरा करेंगे जो आप नहीं कर सकते। आप अपना हिस्सा करें, और परमेश्वर अपना हिस्सा करेंगे।

टालमटोल करने की आदत पर काबू पाने के कदम

1. देरी की पहचान करें।

पहचानें कि आप किस चीज़ से लगातार बच रहे हैं, देरी कर रहे हैं, या जिसे टाल रहे हैं—और स्वयं से पूछें कि ऐसा क्यों है।

2. अपनी मानसिकता को नया रूप दें।

"मैं इसे बाद में करूंगा" की जगह यह सोचें: "भले ही यह छोटा सा काम हो, मैं अभी इसकी शुरुआत करूंगा।"

3. अपने उद्देश्य को याद रखें।

अपने जीवन के उद्देश्य और उस काम के महत्व को ध्यान में रखें जिसे आप टाल रहे हैं।

उद्देश्य ही कर्म को प्रेरित करता है।

जब आप इन कदमों को प्रार्थना और परमेश्वर के वचन को पढ़ने के साथ जोड़ते हैं, तो वह आपको बुद्धि के साथ मार्गदर्शन देंगे और आसानी से इस पर काबू पाने में आपकी मदद करेंगे।

परमेश्वर ने आपके भीतर कई प्रतिभाएं रखी हैं। चूंकि दिन बुरे हैं, इसलिए अपने समय का बुद्धिमानी से उपयोग करें। अपनी प्रतिभाओं का उपयोग परमेश्वर की महिमा के लिए करें। प्रभु यीशु जल्द ही आने वाले हैं, और वह हर व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार प्रतिफल देंगे।

Heart Beat

जब पाप एक कैदखाना बन जाता है

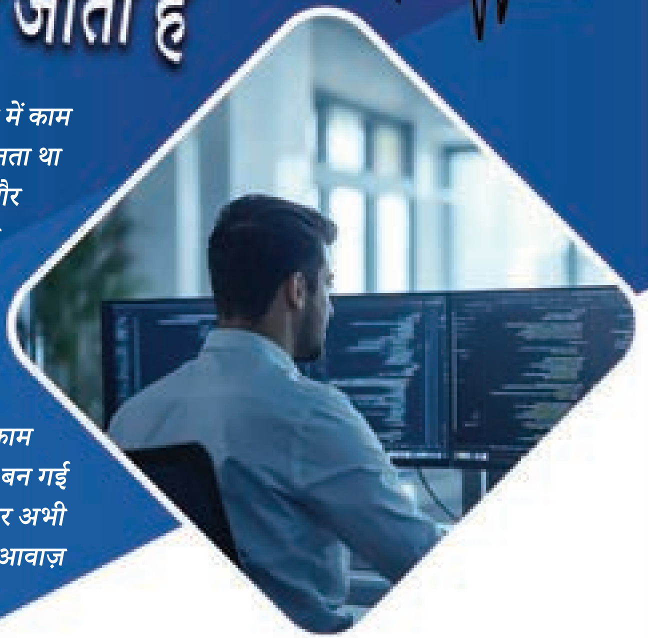

मैंने अपनी पढ़ाई ऊटी में पूरी की और अभी चेन्नई की एक IT कंपनी में काम कर रहा हूँ। मैं कभी एक ऐसा नौजवान था जो परमेश्वर की आज्ञा मानता था और पवित्र जीवन जीता था। लेकिन अब, कुछ मित्रों, गलत रिश्तों और मोबाइल फ़ोन की लत की वजह से, मैं गलत तरह का कंटेंट देखने का गुलाम बन गया हूँ।

मैं पहले परमेश्वर की सेवा करता था, लेकिन अब मैं पाप के गहरे दलदल में गिर गया हूँ। मैंने कई बार माफ़ी माँगने और पश्चाताप करने की कोशिश की है, लेकिन कुछ भी बदलता हुआ नहीं दिखता। मुझे लगता है कि मैं हमेशा के लिए फँस गया हूँ। रात की शिफ्ट में काम करना और सुबह का सारा समय फ़ोन पर बिताते रहना मेरी दिनचर्या बन गई है। हाल ही में, एक सवाल मुझे बार-बार परेशान कर रहा है—"अगर अभी अचानक मेरी मौत हो जाए, तो मैं कहाँ जाऊँगा?" मेरे अंदर से एक आवाज़ आती है, "ज़रूर नरक में।" लेकिन... क्या मेरे लिए अभी भी कोई उम्मीद बाकी है?

— रघु, ऊटी

प्रिय भाई रघु,

आपकी इस दुखद स्थिति के बारे में पढ़कर सचमुच बहुत दुख होता है। आप कभी परमेश्वर के लिए जुनून के साथ जीते थे और पूरी वफ़ादारी से उनकी सेवा करते थे, लेकिन अब आप पाप के एक गहरे गड्ढे में फँसा हुआ और बेबस महसूस कर रहे हैं—और यह सचमुच हृदय तोड़ने वाला है।

लेकिन रघु, आप चाहे कितने भी गहरे गड्ढे में क्यों न गिर गए हों, यीशु का बचाने वाला हाथ आपको ऊपर उठाने के लिए काफी सामर्थशाली है। निश्चित रूप से अभी भी उम्मीद बाकी है!

आपको बस इतना करना है: आप जहाँ भी हों, चाहे आप कितने भी गहरे में फँसा हुआ महसूस कर रहे हों, बस यीशु का नाम पुकारें। वह आपके पास आने, आपके साथ खड़े होने, आपकी मदद करने और आपको उस गड्ढे से बाहर निकालने में सक्षम हैं।

हो सकता है कि उन्हें पुकारते-पुकारते आप थक गए हों, क्योंकि आप कई बार गिरे हैं। आप सोच सकते हैं, "मैं कितनी बार माफ़ी माँगूँ? मैं कितनी बार पश्चाताप करूँ?" यही थकावट और अपराध-बोध आपको पीछे खींच रहा होगा। लेकिन सुनिए—जब आप उन्हें पुकारते हैं, तो अभी भी छुटकारा मिलना संभव है।

आपके अंदर जो यह इच्छा है—कि आप इस पाप के गड्ढे से बाहर निकलें—यह इच्छा परमेश्वर ने स्वयं आपके भीतर डाली है। बहुत से लोग पाप के आदी हो जाते हैं, उसका मज़ा लेते हैं, और हमेशा के लिए उसी में रहने का फ़ैसला कर लेते हैं। लेकिन यह बात कि आप बाहर निकलना चाहते हैं, इसके लिए हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए।

अब इस तरह प्रार्थना करना शुरू करें: "हे यीशु, मैं अब इस पाप के गड्ढे में और नहीं रहना चाहता। कृपया मुझे बचाओ और मुझे ऊपर उठाओ।" जब आप पूरी ईमानदारी से मदद माँगेंगे, तो आपको निश्चित रूप से आज़ादी मिलेगी।

जब यीशु आपको उस दलदल से बाहर निकाल लेते हैं, तो अपनी आज़ादी को सुरक्षित रखने के लिए यहाँ कुछ कदम दिए गए हैं:

जिन चीज़ों को आपको छोड़ देना चाहिए:

- देर रात तक मोबाइल फ़ोन इस्तेमाल करने से बचें। इसे तभी चार्ज करें जब बहुत ज़रूरी हो।
- अगर वीडियो देखना आपकी सबसे बड़ी कमज़ोरी है, तो इसे रोकने के लिए जान-बूझकर ठोस कदम उठाएँ।
- सभी बेकार के ऐप्स हटा दें—खासकर वे जिन्हें आपने सिर्फ़ वीडियो देखने के लिए डाउनलोड किया था।
- उन मित्रों के कॉन्टैक्ट ब्लॉक कर दें जो आप पर बुरा असर डालते हैं।
- बेकार के ग्रुप्स से बाहर निकल जाएँ।
- WhatsApp, Instagram, Facebook, Snapchat जैसे ऐप्स हटा दें—कोई भी ऐसा प्लेटफ़ॉर्म जो आपको गलत राह पर ले जाता हो।
- सबसे ज़रूरी बात, लंबे समय तक अकेले रहने से बचें। अकेलापन अक्सर कई पापों के दरवाज़े खोल देता है।

बेहतर आदतें बनाने की कोशिश करें:

- अपने IT क्षेत्र में अपने कौशल को बेहतर बनाने के लिए ट्रेनिंग प्रोग्राम में दाखिला लें।

- पता लगाएँ कि कौन सी ट्रेनिंग आपके क्षेत्र में आगे बढ़ने में आपकी मदद कर सकती है, और अपनी HR टीम को भी इसके बारे में सुझाव दें।
- अपना ध्यान वीडियो से हटाकर किताबों, पढ़ाई, कौशल-निर्माण और ऑनलाइन कोर्स पर लगाएँ।
- स्वयं को व्यस्त और काम में लगाए रखें—इससे आपके अंदर अपने आप ही आत्मविश्वास और हिम्मत बढ़ेगी।

जैसे-जैसे आप पवित्रता के मार्ग पर चलेंगे, आप एक नई खुशी और आत्मविश्वास का अनुभव करने लगेंगे। वह अंदरूनी ताकत आपको नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ाएगी। इसलिए इन कदमों को गंभीरता से लें। खुद की रक्षा करें, और उस पुराने गड्ढे में दोबारा गिरे बिना जीत के साथ आगे बढ़ें। आप पवित्रता और जीत भरा जीवन जिएँ!

"उस एक को पुकारें जो आपको गिरने से बचाने में सक्षम है, और जो आपको अपनी महिमामयी उपस्थिति के सामने, बड़े आनंद के साथ, बेदाग प्रस्तुत कर सकता है—और आप विजयी होंगे!" (यहूदा 1:24)

बाइबल खोजें

हेलो मित्रों! हमें विश्वास है कि पिछले महीने आपने यहोशू, न्यायियों और रूत की किताबों पर मनन करते हुए समय बिताया होगा। इस महीने, क्या हम राजाओं और इतिहास की किताबों की पृष्ठभूमि के बारे में जानें?

ये किताबें इस्राएल के राज्य के उदय, विभाजन, पतन और विनाश की कहानी बताती हैं। ये सभी मिलकर, राजशाही के अधीन इस्राएल की यात्रा की एक ऐतिहासिक और आध्यात्मिक तस्वीर पेश करती हैं; ये दिखाती हैं कि परमेश्वर की आज्ञा मानना या न मानना, किस तरह राष्ट्र के नियति को तय करता था।

1 और 2 राजा

यह कहानी राजा दाऊद के शासनकाल के अंतिम दिनों से आगे बढ़ती है। सुलैमान से शुरू होकर, यह राज्य बुद्धि, धन और मंदिर की उपासना के क्षेत्र में अपनी ऊँचाई पर पहुँच जाता है। लेकिन सुलैमान की मृत्यु के बाद, राष्ट्र दो राज्यों में बँट जाता है: इस्राएल (उत्तरी राज्य) और यहूदा (दक्षिणी राज्य)।

उसके बाद आए ज़्यादातर राजाओं ने लोगों को मूर्तिपूजा और नैतिक भ्रष्टाचार की ओर धकेला। इस अंधकार भरे दौर में, एलिय्याह और एलीशा जैसे भविष्यवक्ता उठ खड़े हुए, जिन्होंने लोगों को वापस परमेश्वर की ओर लौटने का आह्वान किया। फिर भी, लगातार पाप करने के कारण, इस्राएल अंततः अश्शूर के हाथों पराजित हो गया, और बाद में यहूदा को बाबुल द्वारा बंदी बना लिया गया।

इन किताबों का मुख्य संदेश यह है:

परमेश्वर की वाचा को तोड़ना उसके दंड का कारण बनता है।

1 और 2 इतिहास

इसके विपरीत, इतिहास की किताबें (Chronicles) देश-निकाले के बाद लिखी गईं, और वे उसी इतिहास के अधिकांश भाग को एक अलग दृष्टिकोण से फिर से बताती हैं। वे मुख्य रूप से यहूदा, मंदिर और दाऊद के वंश पर प्रकाश डालती हैं।

मुख्य लोग

दाऊद, सुलैमान, रहबोआम, यारोबाम, आसा, यहोशापात, हिजकिय्याह, एलिय्याह, एलीशा, यशायाह, अहाब, ईज़ेबेल

इतिहास की किताबों का लेखक उन राजाओं पर ज़ोर देता है जिन्होंने परमेश्वर का आदर किया—जैसे दाऊद, सुलैमान, हिजकिय्याह और योशिय्याह—जबकि उन असफलताओं को अक्सर कम करके दिखाता है या छोड़ देता है, जिन्हें 'राजाओं' की किताबों में प्रमुखता से उजागर किया गया है। उपासना, मंदिर का जीर्णोद्धार, और परमेश्वर की वाचा के प्रति वफ़ादारी—ये ही इन किताबों के केंद्र-बिंदु हैं।

मुख्य घटनाएँ

1. सुलेमान ने मंदिर बनवाया
(1 राजा 5–8,
2 इतिहास 2–7)

2. राज्य का बँटवारा
(1 राजा 12, 2 इतिहास 10)

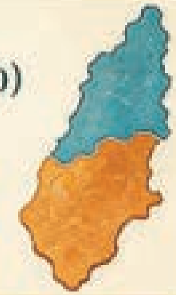

- इस्राएल (उत्तर) – 10 गोत्र
- यहूदा (दक्षिण) – 2 गोत्र

3. यारोबाम की मूर्ति-पूजा
(1 राजा 12–13)

4. एलिय्याह के चमत्कार (1 राजा 17 – 2 राजा 2)

- बारिश रोक दी (1 राजा 17:1)
- कभी न ख़त्म होने वाला आटा और तेल (1 राजा 17:8–16)
- सूखे के बाद बारिश वापस आई (1 राजा 18:41–45)
- विधवा के बेटे को जीवित किया (1 राजा 17:17–24)
- कर्मेल पर्वत पर स्वर्ग से आग उतरी (1 राजा 18:30–38)
- अहाब के रथ के आगे दौड़ा (1 राजा 18:46)
- आग ने सैनिकों को भस्म कर दिया (2 राजा 1:9–12)
- यरदन नदी को दो भागों में बाँटा (2 राजा 2:7–8)
- बवंडर में स्वर्ग ले जाया गया (2 राजा 2:11)

5. एलीशा के चमत्कार (2 राजा 2–13)

- यरदन नदी को दो भागों में बाँटा (2 राजा 2:13–14)
- ज़हरीले पानी को ठीक किया (2 राजा 2:19–22)
- विधवा के तेल को बढ़ाया (2 राजा 4:1–7)
- थोड़े से भोजन से 100 लोगों को खिलाया (2 राजा 4:42–44)
- शूनेमवासी स्त्री के बेटे को जीवित किया (2 राजा 4:32–37)
- एक मरा हुआ व्यक्ति फिर से जीवित हो गया एलीशा की हड्डियाँ (2 राजा 13:20–21)
- ज़हरीले शोरबे को खाने लायक बनाया (2 राजा 4:38–41)
- नामान को कोढ़ से चंगा किया (2 राजा 5:1–14)
- गेहज़ी को कोढ़ हो गया (2 राजा 5:20–27)
- परमेश्वरीय हस्तक्षेप से मोआब को हराया गया (2 राजा 3:16–25)
- कुल्हाड़ी के फल को पानी पर तैराया (2 राजा 6:1–7)
- दुश्मन की गुप्त योजनाओं का खुलासा किया (2 राजा 6:8–12)
- अपने सेवक की आँखें खोलीं ताकि वह स्वर्गीय सेना को देख सके (2 राजा 6:17)
- दुश्मन की सेना को अंधा किया और फिर उनकी आँखों की रोशनी लौटाई (2 राजा 6:18–23)

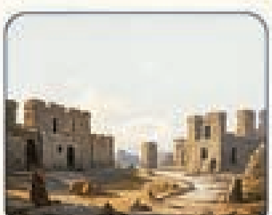

7. हिजकिय्याह की प्रार्थना और उद्धार
(2 राजा 18–19,
2 इतिहास 29–32)

8. योशिय्याह की पुनर्जागृति
(2 राजा 22–23,
2 इतिहास 34–35)

9. यहूदा का पतन और निर्वासन
(2 राजा 24–25,
2 इतिहास 36)

6. इस्राएल का पतन
(2 राजा 17)

आइए, हम प्रार्थना करें!! – जून 2026

बच्चे और शिक्षा

▶ आइए हम प्रार्थना करें कि उन बच्चों के लिए सीखने के दरवाज़े खुलें जो गरीबी के कारण शिक्षा से वंचित हो रहे हैं। प्रभु उन लाखों बच्चों के भविष्य की रक्षा करें जो स्कूल नहीं जा पा रहे हैं। पर्याप्त शिक्षकों की नियुक्ति हो, और शिक्षा प्रणाली और अधिक मज़बूत तथा बेहतर बने।

▶ आइए हम प्रार्थना करें कि शिक्षा के लिए पर्याप्त धन, किताबें और सीखने के संसाधन उपलब्ध हों। हर देश बच्चों को मुफ्त और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करे। परिवारों की आय बढ़े ताकि बच्चों को पढ़ाई के लिए ज़रूरी सहयोग मिल सके।

▶ आइए हम प्रार्थना करें कि हमारे देश में वह स्थिति बदले जहाँ कई मेहनती और योग्य छात्र चिकित्सा और इंजीनियरिंग जैसी उच्च शिक्षा में प्रवेश के अवसर खो देते हैं। भ्रष्टाचार और अनुचित प्रवेश प्रक्रियाएँ बंद हों, और हर योग्य छात्र को पढ़ाई का एक निष्पक्ष अवसर मिले।

सरकारी अस्पताल

आइए हम प्रार्थना करें कि सरकारी अस्पतालों का वातावरण स्वच्छ और स्वस्थ हो, वहाँ आधुनिक चिकित्सा सुविधाएँ हों और मरीज़ों की उचित देखभाल हो। कुशल डॉक्टर करुणा और समर्पण के साथ सेवा करें। बच्चों के अपहरण, हिंसा और चोरी जैसे अन्याय पूरी तरह समाप्त हों। सभी कर्मचारी ईमानदारी और ज़िम्मेदारी के साथ काम करें।

बच्चों के विरुद्ध अपराध

▶ आइए हम प्रार्थना करें कि बच्चों के विरुद्ध सभी प्रकार के यौन शोषण पूरी तरह समाप्त हो जाएँ। हर वह बुराई जड़ से मिट जाए जो पापपूर्ण इच्छाओं को जन्म देती है। जो लोग बच्चों को नुकसान पहुँचाते हैं, वे पश्चाताप करें और यीशु को स्वीकार करें।

▶ आइए हम प्रार्थना करें कि बच्चों के अपहरण, उनकी तस्करी और उन्हें शोषण की ओर धकेलने जैसे अपराधों का अंत हो।

प्रभावित बच्चों को बचाया जाए, उन्हें मानसिक-शारीरिक रूप से स्वस्थ किया जाए और उनकी रक्षा की जाए।

▶ आइए हम प्रार्थना करें कि स्कूलों में होने वाला यौन उत्पीड़न पूरी तरह बंद हो जाए। छात्रों, शिक्षकों और परिवहन कर्मचारियों से जुड़े हर गलत काम के खिलाफ सख्त कार्रवाई हो। हर बच्चा सुरक्षित रहे और उसे आशीष मिले।

बच्चे और शिक्षा

▶ आइए हम प्रार्थना करें कि वायु प्रदूषण के हानिकारक प्रभाव—गर्भ में पल रहे शिशुओं से लेकर बुज़ुर्गों तक—कम हों। श्वसन संबंधी बीमारियों से होने वाली मृत्यु दर में कमी आए, और शिशुओं की रक्षा हो।

▶ आइए हम अपने देश, भारत के लिए प्रार्थना करें, जो गंभीर वायु प्रदूषण का सामना करने वाले देशों में से एक है। दिल्ली, बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे स्थानों में बढ़ते प्रदूषण पर नियंत्रण हो, और लोगों के स्वास्थ्य की रक्षा हो।

▶ आइए हम प्रार्थना करें कि दुनिया भर के देश जलवायु परिवर्तन का सामना करने के लिए एकजुट हों। ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए समझदारी भरे कऽदम उठाए जाएं, और लोगों को प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा मिले।

बच्चे और शिक्षा

▶ आइए हम प्रार्थना करें कि बच्चे अपराध से दूर रहें और सही रास्ते पर चलें। बुरी आदतें, हिंसक विचार और गलत संगति दूर हो जाएं। स्कूल और शिक्षण संस्थान ऐसी जगहें बनें जो अनुशासन और परमेश्वरीय चरित्र का निर्माण करें।

▶ आइए हम प्रार्थना करें कि युवाओं को सोशल मीडिया, फिल्मों और हानिकारक सांस्कृतिक प्रभावों से होने वाले विनाश से सुरक्षा मिले। पारिवारिक मूल्यों की पुनर्स्थापना हो, और हमारे राष्ट्र में पवित्रता और नेकी की चमक दिखाई दे।

समाज के लिए रोटी

एक बीते हुए युग की कल्पना कीजिए—1800 का दशक। तब हवाई जहाज़ नहीं होते थे। समुद्र पार करने के लिए, केवल जहाज़ से ही यात्रा करनी पड़ती थी। कई लोग जो दूर-दराज के देशों में जाने के लिए अपने परिवारों को छोड़कर गए, वे कभी वापस नहीं लौटे। वह त्याग, अनिश्चितता और अटूट साहस का युग था।

उस समय के दौरान, एलेन अर्नोल्ड नाम की एक युवती, चार अन्य ऑस्ट्रेलियाई बैपटिस्ट महिलाओं के साथ, परमेश्वर के कार्य में सेवा करने के लिए ब्रिटिश भारत—पूर्वी बंगाल (वर्तमान बांग्लादेश)—आई। ये पाँचों महिलाएँ, जिनकी उम्र बीस के दशक में थी, घर के सुख-आराम को छोड़कर उन लोगों के बीच मिशनरी बनने चली गईं जो सच्ची आराधना से अनजान थे—विशेषकर महिलाओं के बीच—ताकि वे जीवित परमेश्वर के बारे में बता सकें।

एक अलौकिक बुलाहट

हालाँकि एलेन का जन्म इंग्लैंड में हुआ था, लेकिन 1879 में उनका परिवार एडिलेड चला गया, जहाँ उन्होंने एक शिक्षिका के रूप में काम किया। उन वर्षों के दौरान, पूर्वी बंगाल के फरीदपुर मिशन से पंचानन विश्वास नाम के एक व्यक्ति दक्षिण ऑस्ट्रेलिया आए और वहाँ के चर्चों से आग्रह किया कि वे भारत में महिला मिशनरियों को भेजें।उनकी इस अपील ने एलेन के बुलाहट की पुष्टि कर दी।

एक सुलगते दिल की वापसी

बुनियादी चिकित्सा प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद, एलेन 1882 में फरीदपुर पहुँचीं और तुरंत स्थानीय भाषा सीखना शुरू कर दिया।

हालाँकि, वे गंभीर रूप से बीमार पड़ गईं, जिसके कारण उन्हें 1884 में ऑस्ट्रेलिया वापस लौटना पड़ा।फिर भी, मसीह की सेवा करने की उनके भीतर जल रही लौ बुझ न सकी। नए दृढ़ संकल्प के साथ, वे 1885 में बंगाल लौट आईं, और उनके साथ चार और महिलाएँ भी थीं जो मिशन के कार्य में शामिल हो गईं। उस चमत्कार के कारण, जिसमें यीशु ने पाँच रोटियों और दो मछलियों से भीड़ को भोजन कराया था, इन पाँच महिलाओं को प्रेम से यह नाम दिया गया:

पाँच जौ की रोटियाँ

वे घर-घर गईं, महिलाओं के बीच बैठीं, उनसे बातचीत की, उनके साथ प्रार्थना की, उन्हें पवित्र शास्त्र सिखाया, और धीरे-धीरे लोगों के हृदय खुलने लगे।

सेवा में समर्पित एक जीवन

एलेन ने फरीदपुर में चिकित्सा, शिक्षा और निर्माण संबंधी कार्यों की देखरेख की।

1886 में, वे कोमिला चली गईं और वहाँ एक नया मिशन केंद्र स्थापित किया।

बाद में, उन्होंने पाबना और अताईकुला में भी पूरी निष्ठा के साथ सेवा की; वे लगातार सुसमाचार का प्रचार करती रहीं, स्कूल खोले और लोगों के कल्याण के लिए अस्पताल बनवाए।

अपनी निस्वार्थ सेवा के कारण, स्थानीय समुदाय के लोग उन्हें बहुत प्रेम करते थे। 1930 में, वह कुछ समय के लिए ऑस्ट्रेलिया लौटीं, लेकिन जल्द ही अताईकुला वापस आ गईं। वहाँ, 1931 में, उन्होंने अपनी अंतिम साँस तक सेवा के मार्ग पर चलना जारी रखा।

आज के युवाओं के लिए एक चुनौती

ये महिलाएँ साधारण थीं।

वे प्रसिद्ध नहीं थीं।

उनके पास कोई बड़ी सांसारिक सत्ता नहीं थी।

उनके पास कोई सांसारिक प्रतिष्ठा नहीं थी।

लेकिन उन्होंने स्वयं को परमेश्वर के उद्देश्य के प्रति समर्पित कर दिया।

और क्योंकि उन्होंने स्वयं को समर्पित किया, इसलिए परमेश्वर ने उनका ज़बरदस्त रीति से उपयोग किया।

आज, प्रभु एक बार फिर पूछते हैं:

कौन जाएगा?

कौन बोलेगा?

कौन इस पीढ़ी तक सुसमाचार पहुँचाएगा?

एक सदी पहले, परमेश्वर ने उन महिलाओं को बुलाया था।

आज... वह आपको बुला रहे हैं।

क्या आप उनकी सेवा के लिए तैयार हैं?

समाचार

तमिलनाडु में बढ़ती बिजली की मांग

तमिलनाडु की रोज़ाना बिजली की खपत बढ़कर 20,000 मेगावाट हो गई

अधिकारियों ने बिना किसी रुकावट के बिजली सप्लाई का भरोसा दिया

अधिकारियों ने भरोसा दिलाया है कि अगले तीन महीनों तक जनता की बढ़ती बिजली की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए, हर दिन 22,000 मेगावाट तक बिजली सप्लाई करने में कोई कमी नहीं आएगी।

आम तौर पर, तमिलनाडु की रोज़ाना बिजली की ज़रूरत लगभग 16,000 मेगावाट होती है। लेकिन, गर्मियों के मौसम में पंखे, एयर कंडीशनर और रेफ्रिजरेटर जैसे बिजली के उपकरणों के ज़्यादा इस्तेमाल से यह मांग बढ़कर लगभग 20,000 मेगावाट तक पहुँच गई है। पिछले साल, 2 मई को, राज्य में अब तक की सबसे ज़्यादा बिजली की खपत 20,830 मेगावाट दर्ज की गई थी। अब जब गर्मी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है, तो बिजली का इस्तेमाल और भी बढ़ने की उम्मीद है।

अधिकारियों का अनुमान है कि बिजली की रोज़ाना मांग जल्द ही 22,000 मेगावाट तक पहुँच सकती है।

अभी, तमिलनाडु बिजली बोर्ड के तहत चलने वाले थर्मल पावर स्टेशन रोज़ाना लगभग 4,000 मेगावाट बिजली बनाते हैं। इसके अलावा, राज्य को ये भी मिलता है:

- केंद्र सरकार के पावर पूल से 6,000 मेगावाट,
- सौर ऊर्जा से 6,000 मेगावाट,
- लंबे समय के खरीद समझौतों के तहत 2,000 मेगावाट, और
- मध्यम समय के बिजली खरीद इंतज़ामों के ज़रिए 2,000 मेगावाट।

अगले तीन महीनों में ज़रूरी बाकी 2,000 मेगावाट बिजली निजी कंपनियों और दूसरे राज्यों से कम समय के बिजली खरीद और बिजली एक्सचेंज समझौतों के ज़रिए ली जाएगी।

इस बीच, पानी, गैस और हवा से मिलने वाली ऊर्जा के स्रोतों से बनी बिजली का इस्तेमाल सबसे ज़्यादा मांग वाले घंटों में, खासकर शाम 6 बजे से सुबह 5 बजे तक, असरदार तरीके से किया जा रहा है।

अधिकारियों ने आगे बताया कि पूरे राज्य में बिना किसी रुकावट के बिजली बाँटने को पक्का करने के लिए सभी ज़रूरी एहतियाती और बचाव के कदम पहले ही उठा लिए गए हैं, जिससे यह गारंटी मिलती है कि जनता की बिजली की ज़रूरतें बिना किसी रुकावट के पूरी की जाएँगी ।

युवा जागृति शिविर

परमेश्वर की अलौकिक योजना के अनुसार, 13 से 15 मई तक दिल्ली राज्य के डॉन बॉस्को रिसोर्स सेंटर में एक 'युवा जागृति शिविर' (Youth Revival Camp) सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। इस शिविर का उद्देश्य ऐसे युवाओं को तैयार करना था जो जहाँ कहीं भी जाएँ, वहाँ जागृति की आग फैलाएँ।

इस शिविर में 150 से अधिक युवाओं ने भाग लिया और वे आध्यात्मिक जागृति की एक ताज़ा आग से सशक्त होकर यहाँ से विदा हुए। डॉ. अनबुराजन, ब्रदर सैम जेबाराज और ब्रदर अविनाश के माध्यम से परमेश्वर ने अपनी सामर्थ का ज़ोरदार प्रदर्शन किया; इन सभी ने पूरे जोश और सामर्थ्य के साथ अपनी सेवाएँ प्रदान कीं।

प्रभु ने शिविर में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति को अपने वरदानों, सामर्थ्य और आध्यात्मिक शक्ति से परिपूर्ण कर दिया, जिससे सभी के हृदय रूपांतरित हो गए और परमेश्वर के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रज्वलित हो उठे।

सारी महिमा केवल परमेश्वर की ही है!